International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 12, Issue 05, May 2025
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com
© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

बच्चों के विकास और उनके विद्यालयी शिक्षा में मध्यान भोजन का प्रभाव

बीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा
गृविज्ञान विभाग
Author: प्रतीक्षा त्रिपाठी
Corresponding Author: प्रो0 अमरजीत कुमार

Abstract

भारत सरकार द्वारा संचालित मध्यान भेजन योजना ने बच्चों के विकास और उनके विद्यालयी शिक्षा में काफी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि एम०डी०एम० कार्यक्रम की शुरूआत 1995 में हुई थी हालांकि इस योजना को **2007—08** तक पूरे बिहार में सफलता पूर्वक लागू कर दिया गया। इस योजना के अंतर्गत वर्ग I से वर्ग VIII तक के बच्चों को मुफ्त में दोपहर का भोजन प्रदान किया जाता है जो उनके स्वास्थ्य और विद्याालयी शिक्षा दोनो के लिए आवश्यक है।

मध्यान भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि इस योजना ने बच्चों के स्वास्थ्य में 15 प्रतिशत का सुधार, उपस्थिति में 20 प्रतिशत का सुधार, बच्चे जो विद्यालय को बीच में ही छोड़ कर भाग जाते थे, उनके ठहराव में 19 प्रतिशत का सुधार, शिक्षा में 10 प्रतिशत का सुधार और सर्वांगीण विकास में 12 प्रतिशत का सुधार हुआ है। इस योजना ने बच्चे जो एक साथ एक समूह में बैठकर भोजन करते हैं उनके अंदर समाजिकता, समानता औा भाईचारा को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस योजना का यह भी लाभ है कि जिन बच्चों को घर में भर पेट भोजन नहीं प्राप्त होता था उन्हें दिन में एक बार अनुशंसित आहार भत्ता लगभग प्राप्त हो जाता है।

इस अध्ययन से यह पता चलता है कि एम०डी०एम० योजना बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास के साथ-साथ यह बच्चों के बीच सामाजिकता के विकास और उनके विद्यालयी शिक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस योजना को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सीकार को इसमें और अधिक सुधारी करने की आवश्यकता है जिसमें विद्यालयी शिक्षा और बच्चों के विकास का स्तर और अधिक ऊँचा हो।

बच्चों के विकास और उनके विद्यालयी शिक्षा में मध्यान भोजन कार्यक्रम के प्रभावों की समीक्षाः-

विगत लगभग तीन दशकों से मध्यान भोजन कार्यक्रम का संचालन कर भारतवर्ष के विद्यालयों में बच्चों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाया गया एक प्रमुख कार्यक्रम है। एम०डी०एम० से विभिन्न लाभ जुड़े हैं जिसमें बच्चों का बेहतर संज्ञानात्मक विकास, सामुदायिक सहभागिता, कुपोषण में कमी, लैंगिक समानता एवं बेहतर सामाजिकता का विकास इत्यादि शामिल है। जिससे बच्चों के विकास में सहयोग होता है। (गुडर्सन) एट०आल०2012 (मिर्चेव और पावेल 2013) एम०डी०एम० कार्यक्रम लाभ को देखते हुए इसे विकासशील और गरीब देशों के साथ-साथ बहुत से विकसित देशों ने भी इसे अपनाया है। हाल के वर्षों में पूरे विश्व में एम०डी०एम० से लगभग 170 देश (गुगल ज्ञानी) लाभान्वित है, जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा जैसे देश भी शामिल है।

यह लेख प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने जाने वाले बच्चों के विकास और उनकी शिक्षा पर एम०डी०एम० स्कीम के प्रभावों की समीक्षा करता है। सरकारी सहायता प्राप्त प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की सीखने की उपलब्धियों पर मुख्य रूप से विगत के वर्षों के कार्यक्रम के प्रभावों और परिणामों पर एक चर्चा करता है।, साथ ही साथ हम उनके सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक) की भी चर्चा करते हैं। एम०डी०एम० कार्यक्रम को सरकारी विद्यालयों के बच्चों के जिलए बरदान मानने वाले बहुत से लोगों का यह मत है कि विद्यालय में दोपहर का भोजन कार्यक्रम बच्चों को सीखने के स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

इतिहास

मध्यान भोजन योजना पूरे भारत सरकार और सरकारी सहायता प्रापत विद्यालयों में वर्ग- I से वर्ग VIII तक के बच्चों को मुफ्त में दोपहर का भोजन उपलब्ध कराती है। जिसका वार्षिक बजट आवंटन 119,370 मिलियन रूपये है (भारती एट०आल०) इस योजना के तहत प्राथमिक विद्यालयों में इसकी शुरूआत 15 अगस्त 1995 को हुई थी। सन् 2004 में इस कार्यक्रम को संशोधित किया गया और यह मिड्डे मील योजना के नाम से जाना जाने लगा। 2004 से पहले इसे अनाज के रू॰ में बच्चों के बीच बाँटा जाता था 28 नवम्बर 2001 के दिये गये सुप्रीमकोर्ट के आदेश के बाद 01 सितम्बर 2004 से प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के बीच पक्का हुआ भोजन उपलब्ध कराया जाने लगा। 2008–2009 में इस कार्यक्रम का विस्तार कर उच्च प्राथमिक बच्चों VI जव VIII तक को (1–14) वर्ष शामिल किया गया और 2009 में इसे सरकारी रू॰ से एम०डी०एम० कार्यक्रम का नाम दिया गया। (गुगल ज्ञानी) राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत प्राथमिक वर्ग के बच्चों के बीच 450 किलो कैलोरी और 12 ग्राम प्रोटिन जब कि उच्च प्राथमिक बच्चों के लिए 700 किलो कैलोरी और 20 ग्राम प्रोटीन प्रतिदिन अिये जाने का प्रावधान है। विश्व का दूसरा सब से बड़ा आबादी वाला देश भारत ही है जो बच्चों के पोाण से संबंधित समस्याओं से संघर्ष कर आगे बढ़ रहा है (श्रीवास्तव एक चन्द्र एच सिंह एस०के०एट०आल० भारत में 1998–2016) देश को भूख का सामना करना पड़ रहा है जैसे कि ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022 में इसके 107 वे स्थान से स्पष्ट हो रहा है (के०वॉन

ग्रेबमर० बर्नस्टीन एम विएमर्स एल रेनर 2022@ CgsPace.Cgiarorg) (राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण **2019** के अनुसार) **5** से **9** वर्ष की आयु के 22.3% बच्चों की लम्बाई में कमी देखी गई 35.5% बच्चों का वनज कम था और **5—9** वर्ष की आयु के 31.1% बच्चों में उनकी बाहों और भुजाओं की स्थिति सही नहीं है। यदि बालक के विद्यालयी शिक्षा की बात करें तो शिक्षा लक्ष्य के विकास में महतवपुर्ण भूमिका निभाता है खराब पोषण के साथ गरीबी अशिक्षा सहित कई ऐसे कारण हैं जो बच्चों के शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करता है संज्ञानात्मक विकास, ध्यान, एकाग्रता अत्यादि को बाधित करता है। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनंसार विद्यालयों में नामांकन न लेने वाले बच्चों का प्रतिशत 1971 में 39.2% से घटकर 2022 में 4.9% हो गया हालांकि 2021 (https://date.worldbank.org/indicator/SE.PRM.UNER?Locations=IN) google) में अभी भी 3 मिलियन बच्चे विद्यायल के बाहर हैं। (गौसल्या०एट०आल०) ने भारत में बच्चों की पोषण स्थिति पर एम०डी०एम० के प्रभावों की समीक्षा की है हमने भारत के विद्यालयी बच्चों के विकास और शिक्षा पर एम०डी०एम० के प्रभावों की समीक्षा की।

इस अध्ययन का मूल उद्देश्य प्राथमिक/मध्य विद्यालयों के बालकों/बालिकाओं (**6—10**) वर्ष उ०प्रा० (**10—14**) वर्ष के बच्चों पर एम०डी०एम० स्कीम से उनके विकास और शैक्षणिक परिणामों पर अध्ययन करना है शैक्षणिक परिणामों में विशेषतः उपस्थिति दर नामांकन प्रतिधारण ड्रापआउट और शैक्षिक प्रदर्शन शामिल है इसके लिए मिड डे मील स्कूल फीडिंग प्रोग्राम स्कूल लंच प्रोग्राम पी०एम० पोषण उपस्थिति नामांकन प्रतिधारण ड्राप आउट शैक्षणिक प्रदर्शन आदि की वर्ड शामिल किया गया है। इसमें (सी०आइ०एन०ए०एच०एल० CINAHL और गूगल स्कालर सहित कई डेटा बेस से खोज प्राप्त की गयी है।)

(bmjopen-2023-080100SUPP001 Pdf) जितने भी संबंधित अध्ययन थे उन्हें पड़कर डेटा प्राप्त किया गया है विभिन्न पोषण विकास और विद्यालय शिक्षा पर जानकारी एकत्रित की गयी है। पोषण के अंतर्गत गति शारीरिक विकास जिसमें ऊँचाई, बौनापन, अपव्यय, कम वनज ठडप् भुजाओं की स्थिति इत्यादि थे ।

शैक्षिक प्रदर्शन के लिए (Supplement all file bmjopen-2023-80100SUPP001 Pdf)

इस समीक्षा में देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के विभिन्न राज्यों का डेटा प्रतिनिधित्व है। कुल मिलाकर इस अध्ययन के दौरान (अलमी एफ खलील एस मिर्जा एट अल) (शंकर०आर०अरोड़ा एस० आर० जे० आई एस **2022:10:1—11** dol:1021922/ Srji, V 10172.11.612 google scolar) एमडी एम लाभार्थियों की ऊँचाई और वनज का आकलन किया (IJEEFUS 2018:8:37-46.doi:1024247 /iJeeFU Soct 20185) google scolar और उसकी तुलना आई सी एम आर प्ब्डत द्वारा

निर्धारित मानको से किया। एम०डी०एम० स्कीम की शुरूआत से पहले और बाद में पोषण संबंधी परिणामों पर चर्चा के आधार पर इसके प्रभावों का मूल्याकन के दौरान ऊँचाई और वनज के क्षेत्र esa (Int/Curr Res Acad Rev 2014:2:78-84) google scolar) (Int Sci EnvironTechnol 2017:6:1548-541) में महत्वपूर्ण साकारात्मक परिणामों को पाया गया है (भागवि०एम०कांडपाल एस डी० अग्रवाल पी०एट०आल मिड डे मील इडियन जेकम्युनिटी हेली 2014%26%223&7½ google School इसमें बौनेपन में काफी कमी पाई गयी । जबकि (Int Comm unity med Public health 2021:8:4982) अध्ययन में केवल मामूली सुधार का संकेत प्राप्त हुआ है। (doi.1018203/2394-6040.ijcmph 202113806) google Scholar.

एम०डी०एम० योजना के शुरू होने और उसके बाद में विभिन्न शैक्षणिक परिणामों के आकलन जिसमें (हामिद एट अल बांड इस विचार के लिए) नामांकन छात्र उपस्थिति दर ड्राप आउट में कमी आयी है। इसके आलावा (सिंह एक्या अविनाश टी) के अध्ययन में प्या गया की एम०डी०एम० शुरू होने के बाद प्रदर्शनों में काफी सुधार पाया गया इसके अलावा (सिंह पी, Int/Res Ana/Rerijrar2020:7:109-15google scholar) भी एम०डी०एम० कार्यक्रम के बाद विद्यालयों में छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय सुधार पर प्रकाश डाला है। विद्यालय के दोपहर के भोजन से लाखों बच्चों की भुख मिटाने में मदद मिलती है। यह व्यस्कों के रूप में उनकी शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य और भविष्य की उत्पादकता बढ़ाने में योगदान देती है। (जोमा०एट०आ 2011) इसके अतिरिक्त बच्चों के विकास विद्यालय में उपस्थिति बढ़ाने के साथ ही सीखने की शैक्षिक उपस्थिति में सुधार करना (विश्व खाद्य कार्यक्रम 2009) और सुक्ष्म पोषक ततवों की गोलियाँ कृमिनाशक (अहमद 2004) जैसे पूरक आहार भी दिये जाते है।

अध्ययन की समीक्षाः-

क्र० सं०	अवलोकन संदर्भ	अवलोकन
१	लदमैया० एट०एल० **1999**	मैसुर में दो वर्ष **(1992—1993)** तक अध्ययन किया और पाया कि विद्यालय में नामांकन और उपस्थिति में सुधार हुआ और विद्यालय छोड़ने के दर में कमी आई।
२	नइकएट० अल० **2005**	खास तौर पर ग्रामीण इलाकों में नामांकन में तेज वृद्धि। शिक्षको की अनुपस्थिति पर साकारात्मक प्रभाव माता-पिता के अनुसार एम०डी०एम० से बच्चों के वनज में वृद्धि (72%) रोग प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि (59.2%) और संतुष्टि में (90%) साकारात्मक प्रभाव पड़ा।इन विद्यालयों में बच्चों के अनुसार भोजन स्वादिस्ट (95.6%) है। एकाग्रता में सुधार

		(90%)
३	अविनास एवं मंजूनाथ 2013	मड्रवती शिव मेगा ने अध्ययन के दोरान यह पाया कि एम०डी०एम० को सफलता पूर्वक सभी उद्देश्य उपस्थिति अनुपात वृद्धि हासिल की बी०पी०एल० बच्चों में संतुष्टि और स्वास्थ्य बेहतर हुआ।
४	केयर इंडिया 1977	छात्रों में अनुपस्थिति कम हुई जबकि उपस्थिति में स्थिरता आयी। नामांकन दर में (4%) की वृद्धि हुई।
५	श्रवि 2006	नमांकन उपस्थिति प्रतिधारण का साकारात्मक प्रभाव पड़ा (2-10%) तक का वृद्धि हुई।
६	क्रिस्टी मिंज एट अल 2014	स्रजापुर के अध्ययन में पाया गया कि (**6–12** वर्ष) एम०डी०एम० के शुरूआत से दो वर्ष पूर्व और बाद में स्कूलों का सर्वेक्षण किया गया जिस में कुपोषित और बोने बच्चों के प्रतिशत में कमी पाई गई। लड़कियों में पोषण की स्थिति में लड़कों से ज्यादा सुधार देखा गया। हालाकि मानक से तुलना की जाए तो दोनो में कुल पोषण कम था।
७	आफरीदी **2005**	कर्नाटक और मध्य प्रदेश में सर्वेक्षण किया गया कर्नाटक में मध्य प्रदेश की तुलना में एम०डी०एम० को अधिक योजनाबद्ध और बेहतर तरीके से प्रबंधित पाया गया। यह निष्कर्ष सामुदायिक, गुणवत्ता और संतुष्टि जैसे अवलोकनों पर आधारित थे।
८	सवित्रि एटएल० **2015**	कर्नाटक में **14–16** वर्ष की आयु के बच्चों के लिए अध्ययन किया गया। अध्ययन में बिना एम०डी०एम० कार्यक्रम वाले सरकारी हाईस्कूल शामिल थे। अधिकांश बच्चे कुपोषित थे। एम०डी०एम० के बिना स्कूल के बच्चों की पोषण स्थिति एम०डी०एम० वाले विद्यालय की तुलना में बेहतर थी।
६	शालीनि एट० अल० 2014	कर्नाटक के बैंगलोर में **5–15** वर्ष के बच्चों के लिए एक अध्ययन किया गया जिसमें एक ग्रामीण विद्यालय के एम०डी०एम० की तुलना बैंगलोर के एक शहरी विद्यालय से कि गयीं दोनो लिंगों (सभी आयु वर्ग) का औसत वनज (13.8%) और ऊँचाई (13.2%) मानको से कम था। शहरी बच्चों की तुलना में ग्रामीण बच्चे वनज में और ऊँचाई के लिए मानक मूल्य से कम थे।

परिणामः–

मध्यान भोजन योजना कार्यक्रम को एक ऐसे उद्देश्य के साथ शुरू किया गया कि जैसे विद्यालय जाने वाले आयु के सभी बच्चों की विद्यालय शिक्षा सुनिश्चित करना साथ ही उपस्थिति बढ़ाना, अध्ययन दर में सुधार करना और बच्चों के सीखने के स्तर को बढ़ाकर बाल स्वास्थ्य लिमें सर्वांगीण विकास शामिल है सुधार करना।

अध्ययन में पाया गया हे एम०डी०एम० का पोषण यानी बच्चों के विकास और शिक्षा दोनो पर साकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सी०एन०एन०एस० के अनुसार भारत में **5** से **9** वर्ष की आयु के **32** : बच्चों में माप कम था। (राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण **2019**/स्वास्थ्य और कलयाण मंत्रालय डवीú भारत सरकार 2019 google Scholar) हमारे देश में एम०डी०एम० कार्यक्रम की समीक्षा से यह बात ज्ञात हुई कि कुछ बच्चे गुणमत्ता और मेनु में विविधता न होने के कारण और बड़े बच्चे लज्जावश भोजन का सेवन करने में हिचकिचाते हैं (स्वामी डी गुततु ए अफशारियाबी **2021**)(फुड न्युट्रबुल 2009%30%171&82 doi:10.1177 /156482650 90300 0209 **कॉसरेफ** Pub डमक वेव ऑफ साइंस हववहसम के अध्ययन में एम.डी०एम० अक्सर अपने निर्धारित मानदण्डों से भटक जाता है।

अध्ययन में भारत में एम०डी०एम० कार्यक्रम के कार्यान्वयन में त्रुटियें की जानकारी प्राप्त की है। इसमें बजट, स्वच्छता, बर्बादी, मानव बल की कमी, भ्रष्टाचार इत्यादि है। (Int multi discipline Resmod Educ 2016:2:644-510, Int multidi cip Acad Res2017:5:1-8 google scholar जिसके परिणाम स्वरूप बच्चों में पोषण संबंधे सुधार का सीमित प्रभाव पड़ता है, जिसमें **2020–2021** का एम०डी०एम० बजट शिक्षा मंत्रालय के कुल बजट का **11** : है (जी सी एन एफ जीम state survey of school meal programs India 2020 google scholar) एम०डी०एम० का छात्रों के स्वास्थ्य प्रतिरक्षा और पोषण संबंधी स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव की रिर्पोट में नौ राज्यों में **2006** से **48** : लगभग कुपोषित थे। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया **6–9** वर्ष के बच्चों में कम वनज का प्रचलन **63** : **ए 10.13** वर्ष के बच्चों में 57.2 % ओर **14–17** वर्ष में 62.8 % था। एन०एन०एम०बी० के आकड़ों से बच्चों में सुक्ष्म पोषक तत्वों की कमी विशेष रूप से कैल्शियम, आयरन और विटामिन (A) की भी कमी पायी गयी। वास्तव में विद्यालयी उम्र के बच्चों के आहार में ऊर्जा खनिज और विटामिनों की कमी थी। (70-80 %) से अधिक बच्चे विटामिन (A) और आयरन की दैनिक भत्ते के 50 % से कम का उपयोग करते हैं (WHO 2000) खाद्य जनित बीमारियाँ एक प्रमुख समस्या है (डफ एट अल 2003) डायल और इवांस 1994 के अनुसार खाद्य जनित बीमारियाँ भोजन में मौजूद सूक्ष्म जीवों द्वारा उत्पादित बेक्टिरिया द्वारा होता है। जिससे यह पता चलता है कि मध्यान भोजन योजना बच्चों के नामांकन और उपसिथिति बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभाता है (एल्डर मैन एट अल **2012**) जिसमें ड्रप आउट की समस्या का समाधान

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

भी होता है (ASER 2005) की रिर्पोट से यह जानकारी प्राप्त हाती है कि **7—12** वर्ष की आयु के 44.1 % बच्चे विद्यालय में नामांकित तो है परन्तु वे अपने वर्गानुसार एक भी अनुच्छेद सही ढंग से नहीं पढ़ पाते हैं और 50 % बच्चे साधारण घटाव और गुणा नहीं कर पाते हैं (पी०एम० पोषण **1—2**) शिक्ष ामंत्रालय नई दिल्ली की रिर्पोट के अनुसार केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने **2021—22 से 2025—26** तक पोषण योजना जारी रखने की मंजूरी दे दी है। इस रिर्पोट में यह भी कहा गया है कि गर्म पके हुए भोकजन से विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थित में सुधार के साथ ही नामांकन व ठहराव में भी वृद्धि हुआ है अधिकतर अध्ययनों में एम०डी०एम० के शुरू होने के पश्चात विद्यालयों में उपस्थिति में काफी सुधार हुआ है। और विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों की संख्या में काफी कमी आयी है। (Glob health 2021:11:04051.doi:10.7189/Jo gh.11.0405) (Ahmed A Ninnoc. C2022, Int, J Environ Res Public health 2022:19:1-13-doi:10.3390/ijer Ph 19063666 cross Ref google scholar) विद्यालय में भोजन उपलब्ध होने से माता-पिता के द्वारा उन खर्चों को आसानी से शिक्षा के क्षेत्र में खर्च करते हैं। शैक्षिक परिणाम में परीक्षाओं के स्कोर में सुधार करी भी जानकारी प्राप्त हुई है। (Intjenvironres Public Cross Reg Google scholar) इन साकारात्मक सुधारों के बावजूद भारतीय विद्यालयी शिक्षा में काफी चुनौतियाँ हैं। 1999 में प्राथमिक वि० में नामांकन दर मात्र 52.4 % थी और उच्च प्राथमिक मे ड्रप आउट की समस्या बनी हुई थी वार्षिक शिक्षा स्थिति रिर्पोट 2022 के अनुसार सरकारी विद्यालयों में नामांकित बच्चों का अनुपात **2018—2022** तक 7.3 % बढ़ा है हालाकि 2021 में लगभग 3.1 % मिलियन बच्चे विद्यालय से बाहर रहे। (World bank India, 2022 http//data:worldbank.org/indicator/SEPRM. UNER? Location = IN) Google scholar ukbd **(2005)** राष्ट्रीय परिवार सर्वेक्षण (300 FH5-3) के अनुसार **2005—6** के कई वर्षों के एम०डी०एम० स्कीम के आकड़ों के शहरी क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों में आयु **(6—10)** के केवल 83.1 % बच्चे और ग्रामीण क्षेत्रों के 81 % बच्चे उपस्थित होते हैं **11—14** वर्ष की आयु के बच्चों में यह घटकर 75 % रह जाता है। और 15 वर्ष तक के बच्चों में यह केवल 42 % तक रह जाता है। उपस्थिति में सुधार पर एम०डी०एम० की कई रिर्पोट उपलब्ध है (लद्दमैया एट एल 1999 अविनाश और मंजुनाथ 2013] रवि 2006, मिश्रा और बहेरा 2004, ब्लू 2005 कौर 2010) बच्चों के नामांकन में सुधार पर रिर्पोट का अध्ययन किया गया। (लद्दमैया एट एल **1999**, रवि 2006, नाइक **2005**, बारू 2008 और प्रतिधारण में (लद्दमैया एट एल **1999**, रवि **2006**, मिश्रा और बहेरा **2004**, कौर **2010** परिदें **2010)** पर एम०डी०एम० की भूमिका पर रिर्पोट उपलब्ध है।

भारत में व़िद्यालय में कम भागीदारी का एक कारण यह भी है कि शिक्षा में बजट का अभाव है यहाँ तक की जहाँ विद्यालयों में शिक्षा तथा भोजन मुफ्त होने के बावजूद गरीब माता-पिता के बच्चों के लिए किताबें, बैग, यूनिफार्म और जूते इत्यादि की व्यवस्था करना मुश्किल होता है। ये सभी कारण बच्चों के घर पर रहने के लिए मजबूर करती है जिससे वे अपने माता-पिता के कार्यों में सहयोग कर सकें जैसा की यह पता लगा कि एम०डी०एम को काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सिन्हा ने अनियमित आपूर्ति, घअिया भोजन की गुणवत्ता भ्रष्टाचार आदि शामिल है। इसी प्रकार से प्रकाशम् **2021** बच्चों की पसंद और पोषण संबंधी आवश्यकताओं के अनुसार मेनू तैयार करके स्वच्छता और गुणवत्ता का प्रयोग करके अधिक भागीदार बनये रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने पोषण और विद्यालयी शिक्षा

के परिणामों पर विश्लेषण किया लिसमें बच्चों की भलाईका एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ। इसके अलावा हमारा अध्ययन एम०डी०एम० और भारत में विद्यालयी शिक्षा के परिणामों पर एम०डी०एम० के प्रभावों का मुल्यवान अध्ययन प्रदान करता है।

निष्कर्षः-

इस समीक्षा में शामिल अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि मध्यान भोजन योजना कार्यक्रम ने सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में जाने वाले बच्चों के बौनेपन और कम वनज के सुधार में योगदान दिया है लेकिन वेस्टींग वनज और एम यू एसी पर खास प्रभाव नहीं पड़ा है बच्चों को आर०डी०ए० के तहत मानक भेजन में सूक्ष्म पोषण तत्वों की कमी पायी गयी। इसके अतिरिक्त समीक्षा में विद्यालयों में नामांकन, उपस्थिति, ठहराव, प्रतिधारण और ड्रप आउट दरों पर एम०डी०एम० स्कीम के अनुकुल प्रभाव काफी हद तक कामयाब रहा। उनके अकादमिक परिणामों में सुधार यह बताता है कि बच्चों का संज्ञानात्मक विकास भी अच्छी तरह हो रहा है।(सरकारी विद्यालय की तुलना में निजी विद्यालयों में पोषण की स्थिति अच्छी है लेकिन इसे केवल एम०डी०एम० से जोड़कर देखना उचित नहीं है, क्योकि निजी विद्यालयों में अमीरों और सरकारी विद्यालयों में अधिकतर गरीबों के बच्चे शिक्षा प्राप्त करते है। बहरहाल यह कहा जा सकता है कि व्यापक रणनितियों के साथ एम०डी०एम० स्कीम की कमियों को दूर करने से भारत में विद्यालय जाने वाले बच्चों के विकास और उनकी शैक्षणिक परिणामों पर और अधिक प्रभाव पड़ने वाला है।

References:

1) Google Scholar Nakao M, Tsunoy. The national school Meal program in india: A literature Revuew Eigougamuzashi 2018:76: S105-14dol: 10.5264/eltogamuzashi:76.5105

2) The world Bank, Word bank open Data: Children out of School, Primary India 2022 Available https/data.World bank org/indicator/ SE. PRM unER.

3) Gousalya V, SindhuR, Prabhu D, etal. Midday Meal Scheme and its impact on the nutritional status of children in India a systematicreview.

4) Minj c. Goud BR, JamesDE, et al. Impait of School mid day meal Program on the nutritional status of Children in rural area of South Karnataka, India. Int j Curr Res Acad Rev 2014:2:78-

5) Bonds, Food for thought evaluating the Imapct of India’s mid-doy meal programon educational attainment 2012

6) Singh A. Do school Meatis Work? Treatinente valuation of the mid-day Meal Scheme in India 2008 Available https//WWW youglives wrgauk.

7) Hamid y. Hamid A Mid-day Meal Scheme and growth of primary edu cation: A case study of district Anartnag in Jammu and Kaslmir.

8) Avinash T. Mid-day Meal Scheme under food Securuty: a study With Special reference to Upper primary schools of rural Bhadravthi Taluk.

9) Shankar R. Aroras Impact of Mid-doy meel Pregramme on the nutritional status of Primary School Children SRJIS 2022:10: 1-11.doi: 10.21922/Srjis'v 10i72.11612

10) Governement of India. United Nations International children's emergency fund, Population council. Comprehensive National Nutrition Survey 2019. Ministry of health and family we l fare (MOHFW). Gorernment of Inidia,2019 Google Scholar.

11) Menezes G. evaluation of mid-day meal programme in BMC Schools. Intj multi discip Acod Res 2017:5:1-8 Google Scholar.

12) Prathap G. Mohan MR naidu MC evaluation of the mid-day meal Programme in india: an over view. Intj multidi scip Res's mod Educ 2016:2:644-51 Google Scholar.

13) The Global child nutrition foundation (GCNF) The state survey of School Meal Programs India.2020 Google Scholar.

14) Planning commission Performance evaluation of Cooked Mid-day Meal (CMDM) work Pap 2011 Google Scholar. 15. Sinha M. Jamal A. Sandhvi S impact of mid-day meal Programme on Anthor Pometric Status of School Children IntJ Sci Environ Technol 2017:6:1548-54 Google Scholar.

15) Ahmed A Ninnoc the food for eduaction Program in Bangladeshi anevaluation of its impact on educational attainment and food Security 2022 Google Scholar.

16) A.K Sharma Samiksha Singh Sonali Meena and A.T. Karnan, Impact of NGO Run midday Meal Programme on nutrition Status and growth of primary School Children, Indian Journal of Pediatrics, Volume 77-July, 2010,763-769

17) Afridi, F. (2005) Mid-day Meals in two status comparing the Financial and Institutional organization of the programme, Econ and Polit. Weeklg, 4(9):1528- 1534

18) Ahmed Au. The Impact of feeding Children in School: evidence from Bangladesh, Washington DC: International food Policy Researeh Instiitute: 2004.

19) Avinash, T. and Manjunath, Avinash (2013) A study of mid-day meel Scheme under food security with special reference to Upper Primary Schools.

20) Baru, R.V. (2008) School health services India the Social and economic contexts Curr Sci,96:5-10

21) Feng and Hartman. 1982 Appl. Environ.Mlcrobiol.43:1320

22) Improving the nutrition quality of the school feeding Programme (Mid-day meal) in India through for tifieation: a case study, Asiapac J Clin Nutr 2014:23(Suppl I):512-519

23) Jain J. and shah, M. (2005) Antyodaya Anna Yojana and mid-day Meals in M.P. Econ and politweekly: 40(48):5076-5088

24) Robison. 1984 Appl.Environ. Microbiol: 48:285